संयोजन के सिद्धान्त एवं अंकन, अर्नुअंकन

संयोजन (Composition) किन्हीं भी दो या दो से अधिक तत्वों की मधुर योजना को कहते हैं। कला की दृष्टि से संयोजन कलात्मक विचारों को व्यवस्थित रूप से प्रदर्शित करने को कहते हैं। संयोजन को सरल शब्दों में संजोना भी कह सकते है। यह संजोना हम जिस माध्यम में कार्य करते है उस से सम्बन्धित तत्वों की मधुर योजना हो सकती है। जब हम चित्रकला की बात करते है। तो इसमें चित्रकला के उन छः तत्वों को संजोते हैं जिनके बारे में हमने कला कुंज के प्रथम भाग में अध्ययन किया था। वह छः तत्व हैं :–

1. रेखा 2. रूप 3. वर्ण 4. तान 5. पोत. 6. अन्तराल

चित्र संयोजन में हम रेखा, रूप, वर्ण आदि को इस प्रकार नियोजित करतें हैं कि चित्र संतुलित एवं आकर्षक दिखाई दे। उदाहरणार्थ जब हम अपने नये घर में कमरे को विभिन्न सामान से सजाते हैं तो उसमें हम इस प्रकार से कुर्सी, मेज, पलंग आदि को विभिन्न स्थानों पर रखते हैं कि कमरा संतुलित एवं आकर्षक नज़र आये। कमरे की दीवारों का रंग, पर्दे का रंग सोफे का कुशन इत्यादि एक दूसरे से मेल खाते हुए हो इस बात का भी ध्यान रखा जाता है। (चित्र संख्या–1 व 2) कुछ इसी प्रकार का नियोजन हम अपने चित्र में विषय सम्बन्धित विभिन्न आकारों एवं वर्णों का प्रयोग करके करते है। हर चित्र को बनाते समय हर कलाकार के सोचने और बनाने में भिन्नता होती है किन्तु कुछ नियम सब पर लागू होते हैं जिनसे चित्र को आकर्षक बनाया जा सकता है। (चित्र संख्या–3, 4 व 5) इन नियमों को हम संयोजन के सिद्धान्त के रूप में जानते है। इन सिद्धान्तों के प्रयोग से चित्र संतुलित एवं आकर्षक प्रतीत होता है। संयोजन के नियम मनमाने ढंग से नहीं बनाये गये हैं बल्कि हमें प्रकृति में यही नियम देखने को मिलते हैं। एक अच्छे चित्र में विविधता में एकता होती है।

चित्र सं. – 1

चित्र सं. – 2

चित्र सं. – 3

चित्र सं. – 4

चित्र सं. – 5

निम्नलिखित छः सिद्धान्तों का पालन करने पर चित्र आकर्षक एवं संतुलित बन पड़ता है। यही संयोजन के सिद्धान्त कहलाते हैं।

1. सहयोग (Unity)
2. सामंजस्य (Harmony)
3. संतुलन (Balance)
4. प्रभाविता (Dominance ro Emphasis)
5. प्रवाह (ताल, लय) (Rhythm)
6. प्रमाण (अनुपात) (Proportion)

1. सहयोग (Unity)

सहयोग का अर्थ चित्र के विभिन्न तत्वों में एकता, समानता एवं एक सम्बन्ध जो समस्त संयोजन को एक सूत्र में पिरोता है। इस से चित्र में विभिन्न आकृतियों, वर्ण आदि में बिखराव नहीं होता है। चित्र में बनी विभिन्न आकृतियाँ एवं वर्ण आदि इस प्रकार संयोजित होने चाहिये कि चित्र एक प्रतीत हो यानि चित्र को टुकड़ों में टूटने से बचाना और एक चित्र में कई चित्र का भाव पैदा न हो, एकता का उद्देश्य होता है। कई चित्रों का समूह एक अच्छा संयोजन नहीं प्रतीत होता।(चित्र संख्या–6) चित्र को देखने से ऐसा नहीं दिखना चाहिये कि चित्र की विभिन्न आकृतियाँ एवं अन्य तत्व सब एक दूसरे से अलग–अलग हों। यह वैसा ही है जैसा कि कपड़ों में हम कमीज के साथ पेंट खरीदते है ना कि धोती। चित्र में सहयोग के लिये विभिन्न आकृतियों एवं वर्ण आदि में समानता से कई बार एकरसता आ जाती है। चित्र में आकर्षण पैदा करने के लिये उसमें थोड़ा विरोधाभास (contrast) भी पैदा करना चाहिये। इसके लिये समान आकार की आकृतियों के साथ कुछ आकृतियाँ भिन्न प्रकार की चित्रित कर सकते है। और इसी प्रकार का प्रयोग वर्ण, तान, पोत इत्यादि में भी कर सकते है। किन्तु इस बात का ख्याल रखना चाहिये कि यह विरोधाभास चित्र के विषय को प्रभावित न कर दे। विरोधाभास मात्र आकर्षण के लिये कम मात्रा में करना चाहिये।

चित्र सं. – 6

2. सामंजस्य (Harmony)

किसी भी चित्र में कई आकृतियाँ बनाई जाती हैं। जब इन आकृतियों में एक या अधिक प्रकार की समानता होती है वहाँ इनका संयोजन सामंजस्य उत्पन्न करता है। सामंजस्य का अर्थ है कि चित्र के सभी तत्व रूप, वर्ण, तान, पोत आदि एक दूसरे से मेल खाते हुए हों। सभी तत्व यथा रेखा, रूप, वर्ण आदि चित्र के विषय से जुड़े हुए हो यह ध्यान रखना चाहिये। गाँव के दृश्य में शहरी वातावरण चित्र में सामंजस्य को भंग करता है। (चित्र संख्या–7 व 8) सामंजस्य विरोधाभास का विलोम है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि चित्र में विरोधाभास का प्रयोग बिलकुल न किया जाये। सामंजस्य चित्र में सौंदर्य का भाव जाग्रत करता है। चित्र में कुछ मुख्य आकृतियाँ होती है एवं कुछ सहायक आकृतियाँ। मुख्य आकृतियों में सामंजस्य होना आवश्यक है। आकर्षण के लिये विरोधाभास सहायक आकृतियों में करना चाहिये। इसी प्रकार रेखा, वर्ण एवं पोत में भी सामंजस्य चित्र में सुन्दरता लाता है। वर्ण सामंजस्य के लिये समीपस्थ वर्ण योजना का प्रयोग कर सकते हैं। ठण्डे वर्ण के साथ ठण्डे वर्णों का प्रयोग चित्र में सामंजस्य भाव लाता है। (चित्र संख्या–9) इसी प्रकार गर्म वर्णों के साथ गर्म वर्ण योजना का प्रयोग करना चाहिये।(चित्र संख्या–10) उदासीन वर्णों (धूमिल, रूपहला) के

चित्र सं. – 7

चित्र सं. – 8

चित्र संख्या–9 ठण्डे वर्ण सामंजस्य

चित्र संख्या–10 गर्म वर्ण सामंजस्य

प्रयोग से भी वर्ण सामंजस्य आता है (चित्र संख्या–11)। पारदर्शक वर्ण का आवरण सभी वर्णों के ऊपर करने से सभी वर्णों में सामंजस्य भाव जाग्रत होता है। खुरदर पोत के साथ खुरदरे पोत का संतुलन सामंजस्य लाता है। (चित्र संख्या–12) गहरी तान एवं हल्की तान के बीच मध्यम तान का प्रयोग चित्र में तान सामंजस्य लाता है।(चित्र संख्या–13) किसी अच्छे चित्र में प्रायः सामंजस्य रहता है किन्तु यह अनिवार्य नहीं है। बाल–कला एवं आदिम कला में इसका विचार नहीं किया जाता है। आधुनिक कला में भी सामंजस्य की अपेक्षा विसम्वाद को अधिक महत्व दिया जाता है। चित्र में सामंजस्य जितना अधिक होगा, तनाव उतना ही शिथिल हो जायेगा और शान्ति का अनुभव होगा।

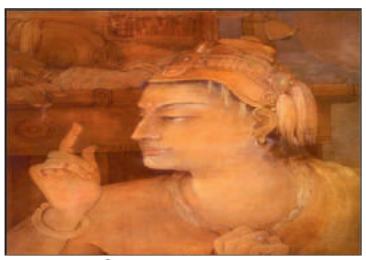

चित्र संख्या–11
उदासीन वर्ण योजना सामंजस्य

चित्र संख्या–12
पोत सामंजस्य

चित्र संख्या–13
तान सामंजस्य

3. संतुलन (Balance)

संतुलन के अनुसार चित्रण के सभी तत्व इस प्रकार व्यवस्थित हों कि उनका भार समस्त चित्र तल पर समुचित रूप से वितरित रहे। यहाँ भार से मतलब आकर्षण में दर्शक की दृष्टि को पकड़ने की क्षमता से है। यह आकर्षण चित्रण के विभिन्न तत्वों के प्रयोग पर निर्भर होता है। इस भार को अन्य भार से संतुलित किया जा सकता है। इसे समझने के लिये हम तराजू का उदाहरण ले सकते है। तराजू के दोनों पलड़े असमान भार से ऊपर नीचे होते हैं। उन्हें बराबर लाने हेतु दोनों पलड़ों में समान भार रखना पड़ता है। (चित्र संख्या–14 व 15) यही सिद्धान्त हमें चित्र में भी प्रयोग लाना होता है। असमान भार चित्र के केन्द्र से असमान दूरी पर संयोजित होते हैं। चित्र में बड़े आकार वाली आकृति का भार अधिक होता है। बड़े आकार को केन्द्र के समीप संयोजित किया जाता है। और छोटे आकार को केन्द्र से दूर संयोजित किया जाता है। गर्म वर्ण का भार अधिक होता है व ठण्डे वर्ण का भार कम होता है। आकार में पोत का प्रयोग उसके भार को बड़ा देता है। वर्ण के बड़े क्षेत्र का प्रभाव शांत होना चाहिये जबकि छोटे क्षेत्रों में शक्तिशाली विरोधाभास रहना चाहिये। इसके लिये बड़े क्षेत्र में ठण्डे वर्ण का प्रयोग करना चाहिये एवं छोटे क्षेत्र में उष्ण वर्ण का प्रयोग संतुलन लाता है।

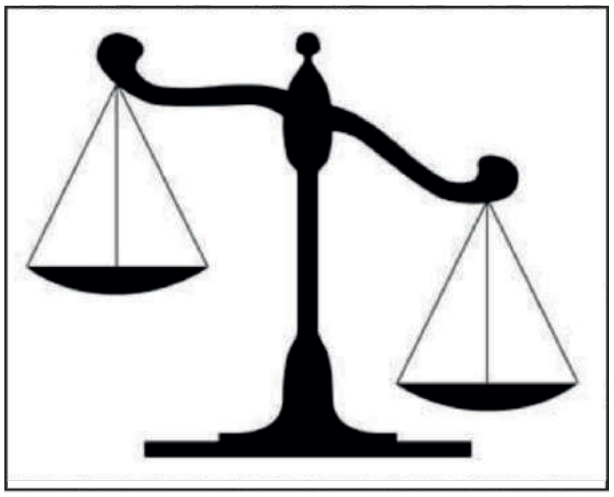

चित्र संख्या–14

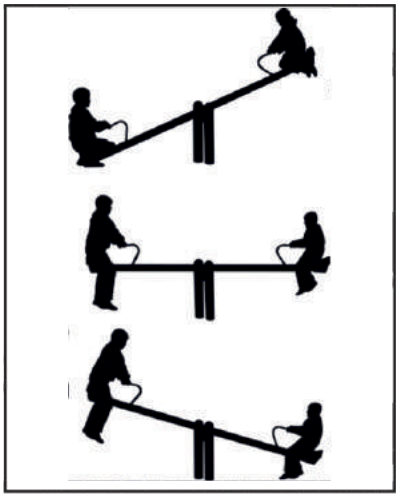

चित्र संख्या–15

4. प्रभाविता (Dominance or Emphasis)

चित्र संख्या–16

प्रभाविता का अर्थ है कि हमारी दृष्टि चित्र के सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व पर सबसे पहले पड़े उसके बाद महत्व के क्रमानुसार अन्य तत्वों पर जाये। चित्र में दर्शक की दृष्टि को पकड़ने की शक्ति होनी चाहिये। चित्र में एक आकर्षण केन्द्र होना चाहिये। जो भी तत्व दर्शक की दृष्टि को इस केन्द्र की ओर ले जाये वो संयोजन की दृष्टि से अच्छे हैं और जो भी तत्व दर्शक की दृष्टि को इस केन्द्र से दूर ले जाये वो ठीक नहीं है। मानवआकृति में आकर्षण का केन्द्र मानव मुख है (चित्र संख्या–16)। प्रभाविता सृजन के लिये मुख्य आकृतियों को चित्रित करते

समय ख्याल रखना चाहिये कि वह आकृतियों के समूह में दब या छुप नहीं जाये। जिस प्रकार भीड़ में खड़ा व्यक्ति सामने होते हुए भी नज़र नहीं आता उसी प्रकार आकृतियों के समूह में मुख्य आकृति पर नज़र नहीं जाती। इसलिये मुख्य आकृति के पीछे रिक्त स्थान रखने से अन्य आकृतियों से बड़ा व आकर्षक रंग से महत्व प्रदान किया जा सकता है। (चित्र संख्या– 17, 18, 19) छाया–प्रकाश में विरोधाभास से भी रूप में प्रभाविता आती है। अलंकृत स्थान या रूप पर दृष्टि आकर्षित होती है। किन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि अधिक अलंकरण दर्शक को विषय से भटका देता है।

चित्र संख्या–17

चित्र संख्या–18

चित्र संख्या–19

5. प्रवाह (ताल, लय) (Rhythm)

प्रवाह का अर्थ है कि दर्शक की दृष्टि का स्वतन्त्र अबाध एवं मधुर विचरण। अच्छे चित्र में दर्शक की दृष्टि सम्पूर्ण चित्र पर बिना किसी उलझन के विचरण कर पाती है। किसी भी चित्र को देखते समय दर्शक की दृष्टि चित्र में बाँयी ओर के निचले भाग में से प्रवेश करती है और फिर सम्पूर्ण चित्र पर घूम जाती है। एक अच्छे चित्रकार में यह गुण होता है कि वह दर्शक की दृष्टि को नियन्त्रित करते हुए इच्छित मार्ग से आगे

बढ़ाता हुआ चित्र के मुख्य स्थान पर ले आता है। यह प्रवाह चित्रण के तत्वों रेखा, रूप, वर्ण, तान आदि मिलकर उत्पन्न करते हैं। हमें लहरदार प्रवाह में आनन्द अधिक अनुभव होता है। जैसे किसी हाई–वे पर अगर हम यात्रा कर रहे हों तो कुछ ही समय में हम यात्रा में नीरसता अनुभव करने लगते हैं और अगर हम किसी गाँव की पगडन्डी पर चल रहे हों तो हर पल हम उत्साहित और उल्लासित रहते हैं(चित्र संख्या–24, 25)। यही सुख हमें माँ की गोद या पालने में भी अनुभव होता है। सीधी सरल गति में एकरसता का भाव होता है। लहरदार रेखायें कोणदार रेखाओं से अधिक गति का आभास देती है। प्राचीन भारतीय कलाओं का आधार लहरदार रेखाऐं ही है। अजन्ता की गुफाओं में बने विभिन्न भित्ती चित्र, राजस्थानी चित्र शैली, मुगल चित्र शैली आदि में लहरदार प्रवाही रेखाओं का ही प्रयोग किया गया है(चित्र संख्या–22 व 23)। इसके अलावा आकृतियों की आवृति यानि बार–एक प्रकार की आकृति को चित्र के विभिन्न स्थानों पर बना कर भी चित्र में प्रवाह का अनुभव किया जा सकता है। (चित्र संख्या–20 व 21)

चित्र संख्या–20

चित्र संख्या–21

चित्र संख्या–22

चित्र संख्या–23

चित्र संख्या–24

चित्र संख्या–25

6. प्रमाण (अनुपात) (Proportion)

प्रमाण का अर्थ है अनुपात। किसी भी चित्र को बनाते समय हमारे मन में प्रश्न आता है कि हम बना रहे आकार को चित्र में कितना बड़ा अथवा छोटा बनाये। लम्बाई चौड़ाई का यह नाप ही अनुपात कहलाता है। यदि हमें किसी गाँव का दृश्य बनाना है तो उसमें पहाड़ कितने बड़े बनाये, वृक्ष का आकार कितना हो आदि निर्धारित करना ही प्रमाण कहलाता है। सभी आकृतियों का अनुपात एक दूसरे से सम्बद्ध है। पहाड़ और पेड़ के अनुपात में ही मानवाकृतियाँ बनाई जाती हैं।(चित्र संख्या 24, 25)

प्रमाण के माध्यम से हम पशु–पक्षियों की भिन्नता, स्त्री–पुरूष आकारों के कद में अन्तर, मनुष्य व देवी–देवताओं के चित्रों में अन्तर निर्धारित करते हैं। मानव शरीर को बनाते समय भी प्रमाण का ज्ञान होना आवश्यक है। मानव शरीर के विभिन्न अंगों में भी आनुपातिक सम्बन्ध है। हमारी हथेली को अगर हम अपने मुँह पर ठोडी से बाल और मस्तक को मिलाने वाली रेखा पर रखें तो हमें ज्ञात होगा कि हमारा मुख और हथेली का प्रमाण एक ही है। इसे एक इकाई के रूप में ताल कहते हैं। भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में कुछ मानवीय नाप बताये गये हैं जिसे 'उत्तम नवताल' कहते हैं। इसके अनुसार किसी भी प्रतिमा के नौ भाग किये जा सकते हैं–

1 माथे के बीच से ठोडी तक	1 ताल
2. कन्धे की हड्डी से छाती तक	1 ताल
3. छाती से नाभि तक	1 ताल
4. नाभि से नितम्ब तक	1 ताल
5. पाँच व छः नितम्ब से घुटनों तक	2 ताल
6 सात व आठ घुटने से पैर के टखने तक	2 ताल

शेष नवें भाग का 1/4 भाग गला, 1/4 भाग घुटने की टोपी, 1/4 भाग पैर व 1/4 भाग माथे से चाँद तक। (चित्र संख्या–26, 27, 28)

शरीर की चौड़ाई की दृष्टि से – सिर 1 भाग, गर्दन लगभग 1/2 भाग, एक कन्धे से दूसरे कन्धे तक की चौड़ाई 3 भाग, छाती $1^{1/2}$, कटि (कमर) $1^{1/4}$, नितम्ब 2 भाग, घुटने 1/2 भाग, पैर 11/4 भाग, हाथ $4^{1/2}$ भाग, जिसमें कन्धे से कोहनी तक 2 भाग, कोहनी से कलाई तक $1^{1/2}$ तथा हथेली 1 भाग।

इसी प्रकार मुख के तीन भाग होते हैं–

1. बीच माथे से भौंहों तक,

2. भौंहों से नाक तक,

3. नाक से ठुड्डी तक।

शरीर के अनुपात की दृष्टि से स्त्री आकृति पुरूषाकृति से 1/4 भाग छोटी होती है। बच्चों की आकृति में नाप अलग होता है। उनकी आकृति बनाते समय गर्दन की लम्बाई कुछ छोटी और सिर अनुपात में कुछ बड़ा कर देते हैं। इससे उनकी शरीर रचना में विभिन्नता आ जाती है।

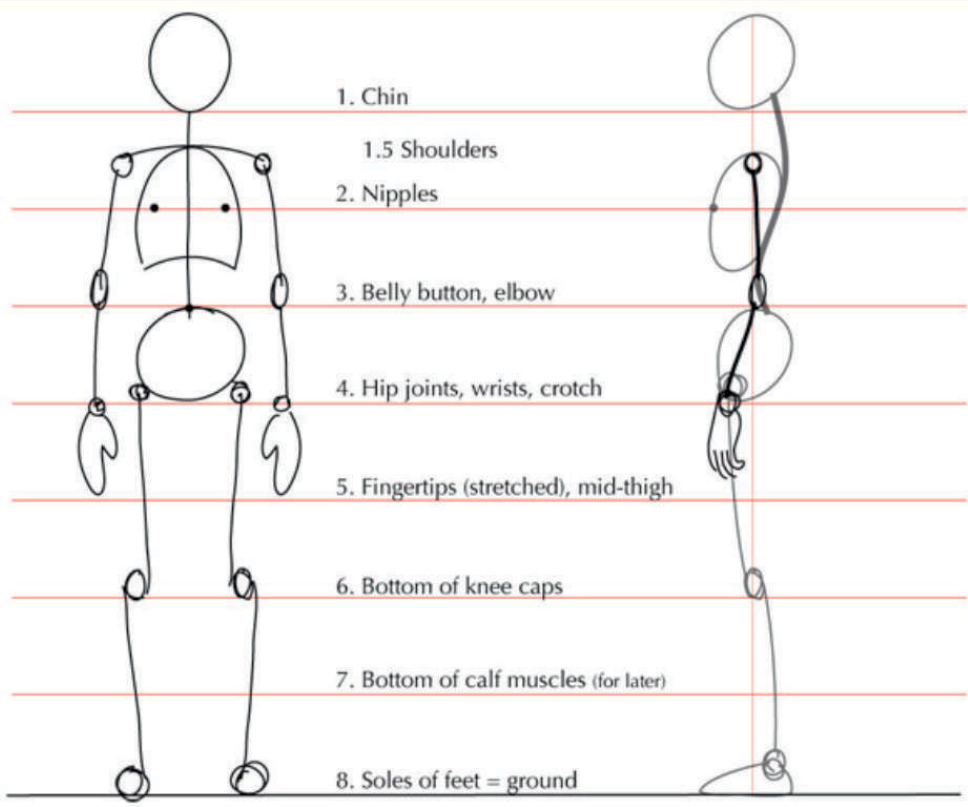

चित्र संख्या–26

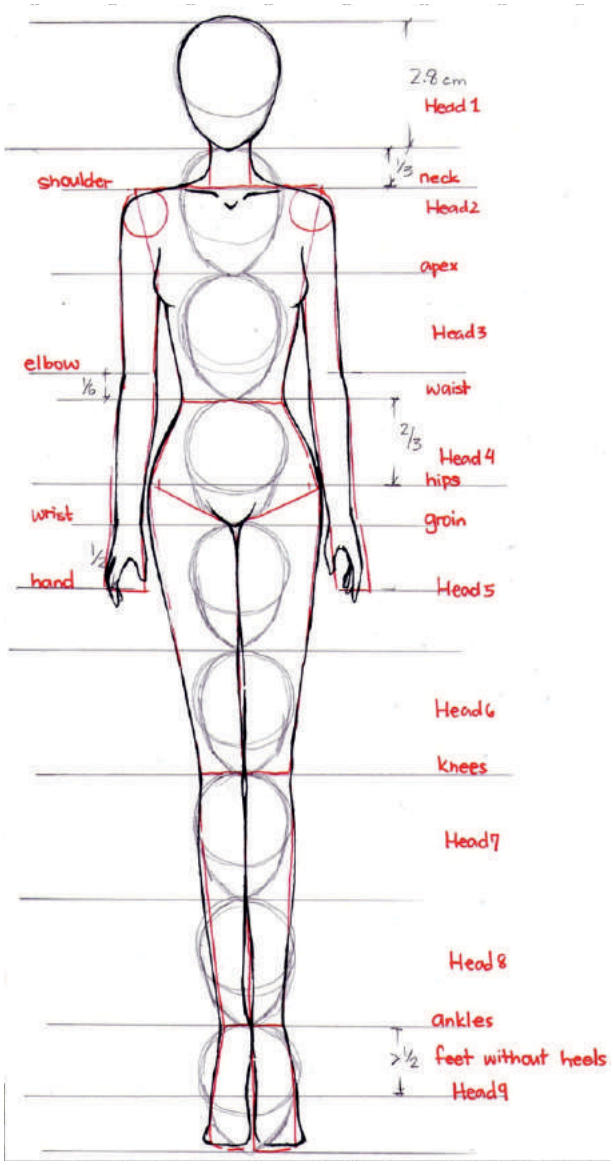
2.8 cm
Head 1
1/3
neck
shoulder
Head 2
apex
Head 3
elbow
1/6
waist
2/3
Head 4
hips
wrist
groin
1/2
hand
Head 5
Head 6
knees
Head 7
Head 8
ankles
>1/2
feet without heels
Head 9

चित्र संख्या–27

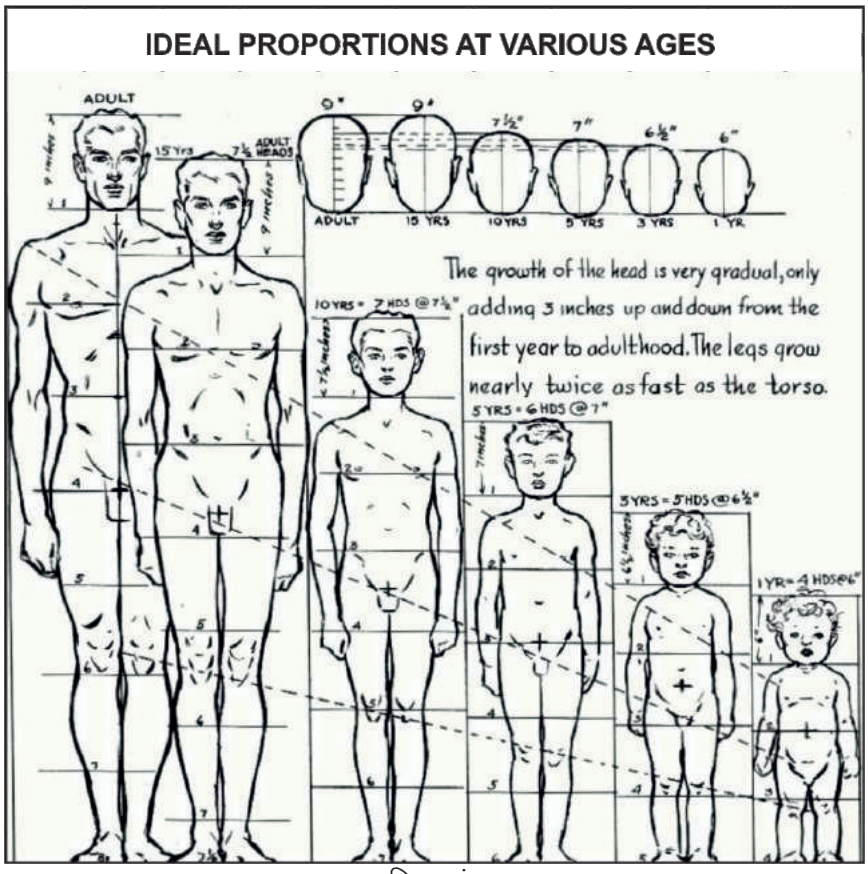

चित्र संख्या–28

अंकन एवं अर्नुअंकन

जब चित्रकार किसी वस्तु का अंकन छाया प्रकाश से आकृति को जिस प्रकार ठोस है वैसी ही दिखाने के ध्येय से करता है तो अंकन होता है। यह अंकन त्रिआयामी प्रभाव यानि लम्बाई, चौड़ाई एवं गहराई का भाव लिये हुए होता है। हमारी वास्तविक दुनिया 'त्रिआयामी' है। अर्थात इसमें तीन आयाम लम्बाई, चौड़ाई एवं गहराई है जिसे हम वास्तविक रूप से माप सकते हैं। किन्तु जिस धरातल पर हम चित्र बनाते हैं जैसे कागज वह द्विआयामी है, उसमें केवल दो ही आयाम – लम्बाई एवं चौड़ाई है। तीसरा आयाम गहराई कागज में नहीं है। हम वास्तविक जगत में जो भी वस्तु या आकार देखते हैं वही वस्तु या आकार हमारी कल्पना में विभिन्न रूपों में दिखाई देता है। जब हम इन वस्तुओं एवं आकारों को चित्र के रूप में कागज या अन्य धरातल पर चित्रित करना चाहते हैं तो वहाँ लम्बाई एवं चौड़ाई तो हम सरलता से बना पाते हैं किन्तु तीसरा आयाम कागज पर न होने के कारण हम गहराई बनाने में असफल हो जाते हैं। यही असफलता किसी भी नव चित्रकार को अपनी कल्पनाशीलता को चित्र के माध्यम से प्रदर्शित करने से रोकती है। चित्र में यह तीसरा आयाम मात्र दृष्टि भ्रम के द्वारा दिखाया जा सकता है जिसे परिप्रेक्ष्य कहते हैं। जिसे सृजित करने के लिये छाया–प्रकाश का प्रयोग एवं रेखाओं के किसी निश्चित कोण पर झुकने के द्वारा दर्शाया जाता है। यह एक तकनीकी कार्य है। जिसे करते समय चित्रकार उलझन में आ जाता है और वह अपने को इस कार्य में असफल

रहने पर चित्रकार बनने के लिये अयोग्य मान कर चित्रण छोड़ देता है। इसी उलझन को दूर करने के लिये कला में अर्नुअंकन का प्रयोग सिखाया जाता है। (चित्र संख्या–29 व 30)

अर्नुअंकन में वास्तविक वस्तु के तीसरे आयाम यानी गहराई का महत्व कम कर चित्र बनाया जाता है। अंकन में से रूप को ठोस दिखाने की जगह चित्रण माध्यम का प्रयोग करते हुए सरल एवं साधारणीकृत रूप चित्र या संयोजन को सुन्दर बनाने के लिये करता है तो अर्नुअंकन होता है। अर्नुअंकित रूप की विशेषता उस माध्यम का सफल तकनीकी प्रयोग होता है जिससे वह चित्र बना हुआ हो। यहाँ उस वास्तविक आकृति का मूल रूप का महत्व कम हो जाता है। अर्नुअंकन में बनाई गई आकृति को सुन्दर दिखाने के लिये हम

चित्र संख्या–29

चित्र संख्या–30

चित्र संख्या–31

चित्र संख्या–32

चित्र संख्या–33

चित्र संख्या–34

वास्तविक वस्तु के आकार की जगह कल्पना का प्रयोग करते हुए उसे मोटा, पतला, लम्बा या छोटा बना सकते हैं। इसके अलावा वास्तविक वस्तुऐं जैसी रखी हुई हैं वैसा ही बनाने के स्थान पर आकृतियों को अपनी कल्पना का प्रयोग करते हुए चित्र में अलग स्थान पर बना सकते हैं। (चित्र संख्या–31 व 32)

चित्र द्विआयामी होता है। जो वस्तुऐं व आकार हम वास्तविक रूप में देखते हैं वह हमारे लिये केवल चित्र बनाने के लिये प्रेरणा का स्त्रोत होता है। चित्र बनाते समय हमें केवल उस वस्तु का मूल आकार का ही ध्यान रख कर चित्रण करना चाहिये। वस्तु की बारीकियों को चित्रित करने की कोशिश में वस्तु या आकार का मूल भाव खत्म हो जाता है। कलाकार को छोटी–छोटी बातों को छोड़ कर सम्पूर्ण प्रभाव को चित्रित करना चाहिये। (चित्र संख्या–33 व 34)

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न

1. चित्र संयोजन में सहयोग का तात्पर्य है।
   (अ) सौंदर्य का बिखराव (ब) वर्ण भरना
   (स) आकर्षण को बिखराव से बचाना (द) रूप का निर्माण करना
2. संतुलन चित्र में व्यस्थित करता है।
   (अ) रंग को (ब) रेखाओं को
   (स) आकार को (द) चित्रण के सभी तत्वों को
3. चित्र में ..... आकर्षण केन्द्र होने चाहिए।
   (अ) दो (ब) तीन
   (स) चार (द) एक
4. चित्र में प्रवाह का तात्पर्य किससे है?
   (अ) दृष्टि का अबाध व मधुर विचरण (ब) विरोधाभास
   (स) दृष्टिभ्रम (द) दृष्टि का रूक रूक कर चित्र पर विचरण
5.. चित्र में गर्म वर्ण का भार ..... होता है।
   (अ) कम (ब) ज्यादा
   (स) बराबर (द) इनमें से कोई नहीं

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. संयोजन किसे कहते हैं?
2. वर्ण सामंजस्य के लिये कौनसी रंग योजना से सामंजस्य जल्दी आ सकता हैं?
3. संतुलन के लिये असमान भार वाले आकार कैसे संयोजित किये जाते हैं?
4. अंकन किसे कहते हैं?
5. प्रभाविता की परिभाषा लिखिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. संयोजन के सिद्धान्त के बारे में लिखिए।
2. अर्नुअंकन किसे कहते हैं? विस्तार से बताइए।

बहुचयनात्मक प्रश्न उत्तरमाला

1. स 2. द 3. द 4. अ 5. ब